

ॐ

श्री हनुमान आरती

Aarti Kije Hanuman Lala Ki

SHRI HANUMAN

DHYAN

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

AARTI

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे ।

रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई ।

संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए ।

लंका जारि सिया सुधि लाये ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।

जात पवनसुत बार न लाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

लंका जारि असुर संहारे ।

सियाराम जी के काज सँवारे ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे ।

लाये संजिवन प्राण उबारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे ।
 अहिरावण की भुजा उखारे ॥
 बाईं भुजा असुर दल मारे ।
 दाहिने भुजा संतजन तारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें ।
 जय जय जय हनुमान उचारें ॥
 कंचन थार कपूर लौ छाई ।
 आरती करत अंजना माई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे ।
 बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥
 लंक विध्वंस किये रघुराई ।
 तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

A free offering from hanumanashtak.in · please share, do not sell.